SNBP International & Senior Secondary School, Chikhali, Pune.
Affiliation No. 1130703
Academic session 2024-25
Class Notes

SUBJECT: HINDI

CLASS -6 **Ls.-** संवाद लेखन, कहानी लेखन (रचनात्मक लेखन)

Prepared By: DEEPIKA MEHRA **Given date -**
Prepared date -

संवाद लेखन

अच्छी संवाद-रचना के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

- संवाद की भाषा सरल तथा सहज होनी चाहिए।
- संवाद लेखन में सरल तथा छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए।
- भाषा सुनने वाले के मानसिक स्तर के अनुरूप होनी चाहिए।
- संवाद लेखन में किसी एक पात्र के कथन को बहुत लंबा नहीं खींचना चाहिए।
- भाव विचारों की पुनरुक्ति से बचना चाहिए।
- संवाद लेखन के अंत में एक बार पढ़कर उसे दोहरा लेना चाहिए ताकि अशुद्धियों का निराकरण किया जा सके।

प्रश्नः 1.
गाँव से कुछ दूरी पर रेलगाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई है, दो मित्र वहाँ पीड़ितों की सहायता के लिए जाना चाहते हैं। उनके मध्य हुए संवाद का लेखन कीजिए।
उत्तरः
अक्षर – नमस्ते संजीव! घबराए हुए कहाँ से भागे आ रहे हो।
संजीव – नमस्ते अक्षर! तुमने सुना नहीं शायद, रेलगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतर गए हैं।
अक्षर – क्या जान-माल की ज़्यादा क्षति हुई है?
संजीव – हाँ, दो डिब्बे पटरी से उतरकर आपस में टकरा गए हैं।
अक्षर – पर, अब तुम कहाँ जा रहे हो?
संजीव – मैं गाँववालों को खबर करने जा रहा हूँ।
संजीव – यह ठीक रहेगा।
अक्षर – मैं गोपी चाचा से कहता हूँ कि वे अपनी जीप से सबको ले चलें। उनकी जीप से घायलों को अस्पताल तक पहुँचाया जा सकता है।
संजीव – डॉ. रमेश अंकल को भी साथ ले चलना। वे घायलों की प्राथमिक चिकित्सा कर सकेंगे।
अक्षर – तुम्हारा यह सुझाव बहुत अच्छा है।
संजीव – चलो, सबको लेकर वहाँ जल्दी से पहुंचते हैं।अक्षर – मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। मैं लोगों से कहूँगा कि यात्रियों के लिए कुछ आवश्यक सामान भी ले चलें।

कहानी लेखन

कहानी लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना चाहिए
(i) दी गई रूपरेखा अथवा संकेतों के आधार पर ही कहानी का विस्तार करना चाहिए।
(ii) कहानी में विभिन्न घटनाओं और प्रसंगों को संतुलित विस्तार देना चाहिए। किसी प्रसंग को न बहुत अधिक संक्षिप्त लिखना चाहिए, न अनावश्यक रूप से बहुत अधिक बढ़ाना चाहिए।
(iii) कहानी का आरम्भ आकर्षक होना चाहिए ताकि कहानी पढ़ने वाले का मन उसे पढ़ने में लगा रहे।
(iv) कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा प्रभावशाली होनी चाहिए। उसमें बहुत अधिक कठिन शब्द तथा लम्बे वाक्य नहीं होनी चाहिए।
(v) कहानी को उपयुक्त एवं आकर्षक शीर्षक देना चाहिए।
(vi) कहानी को प्रभावशाली और रोचक बनाने के लिए मुहावरों व् लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया जा सकता है।
(vii) कहानी हमेशा भूतकाल में ही लिखी जानी चाहिए।

दिए गए संकेतों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए
कुल्हाड़ी नदी में गिर गई…….. तैर नहीं सका….. अपने दुर्भाग्य पर दुखी होकर रोने लगा…….. वन देवता प्रकट हुए…….. ने उसकी कुल्हाड़ी वापस दिलाने का वादा किया……. गोता लगाया… सोने की कुल्हाड़ी लेकर निकला… "मेरी नहीं"… फिर गोता लगाया… चांदी की कुल्हाड़ी लेकर निकला… लकड़हारे ने कहा, "मेरी नहीं"… फिर गोता लगाया… आयालकड़हारे की कुल्हाड़ी के साथ बाहर…….. "यह मेरी कुल्हाड़ी है"……. सचमुच ईमानदार…….. लकड़हारे को तीनों कुल्हाड़ियाँ पुरस्कृत कीं।

एक लकड़हारा नदी के किनारे पेड़ काट रहा था। उसके हाथ पसीने से इतने भीग गए थे कि कुल्हाड़ी से उसकी पकड़ छूट गई। वह उसके हाथ से छूटकर नीचे नदी में गिर गई । बेचारे को तैरना भी नहीं आता था। उसने सोचा कि उसकी कुल्हाड़ी हमेशा के लिए खो गयी है। वह अपने दुर्भाग्य पर बहुत दुखी हुआ और सिसक-सिसक कर रोने लगा।

अचानक बिजली चमकी। वनों के देवता उसके सामने प्रकट हुए। लकड़हारे ने समझाया कि क्या हुआ था। भगवान ने उसे सांत्वना दी, "तुम चिंता मत करो। मैं तुम्हारे लिए तुम्हारी कुल्हाड़ी वापस लाऊंगा।"

यह कहकर उसने नदी में डुबकी लगा दी। कुछ क्षण बाद वह कुल्हाड़ी लेकर बाहर आया। यह सोने की बनी हुई थी। "ये आपका है क्या?" उसने पूछा।

लकड़हारे ने केवल इतना कहा "नहीं!" कुछ सेकंड बाद वह दूसरी कुल्हाड़ी लेकर नदी से बाहर आया। यह चाँदी की बनी हुई थी। "नहीं, नहीं, श्रीमान, यह मेरी कुल्हाड़ी नहीं है," लकड़हारे ने कहा। उसने फिर गोता लगाया और तीसरी कुल्हाड़ी लेकर बाहर आ गया। लकड़हारा कुल्हाड़ी को देखकर जोर से चिल्लाया, "हाँ, हाँ, यह मेरी है – लोहे के ब्लेड वाली लकड़हारे की कुल्हाड़ी।"
जंगल के देवता लकड़हारे की ईमानदारी से प्रभावित हुए। "ये तीनों कुल्हाड़ियाँ मेरी ओर से उपहार के रूप में अपने पास रख लें।" भगवान ने ये शब्द कहे और गायब हो गये।